गौ-गौवंश
पर आधारित
स्वदेशी कृषि

खेती और गांव को समृद्ध बनाने के लिए
गौबर, गौमुत्र द्वारा स्वदेशी कृषि के तरीके

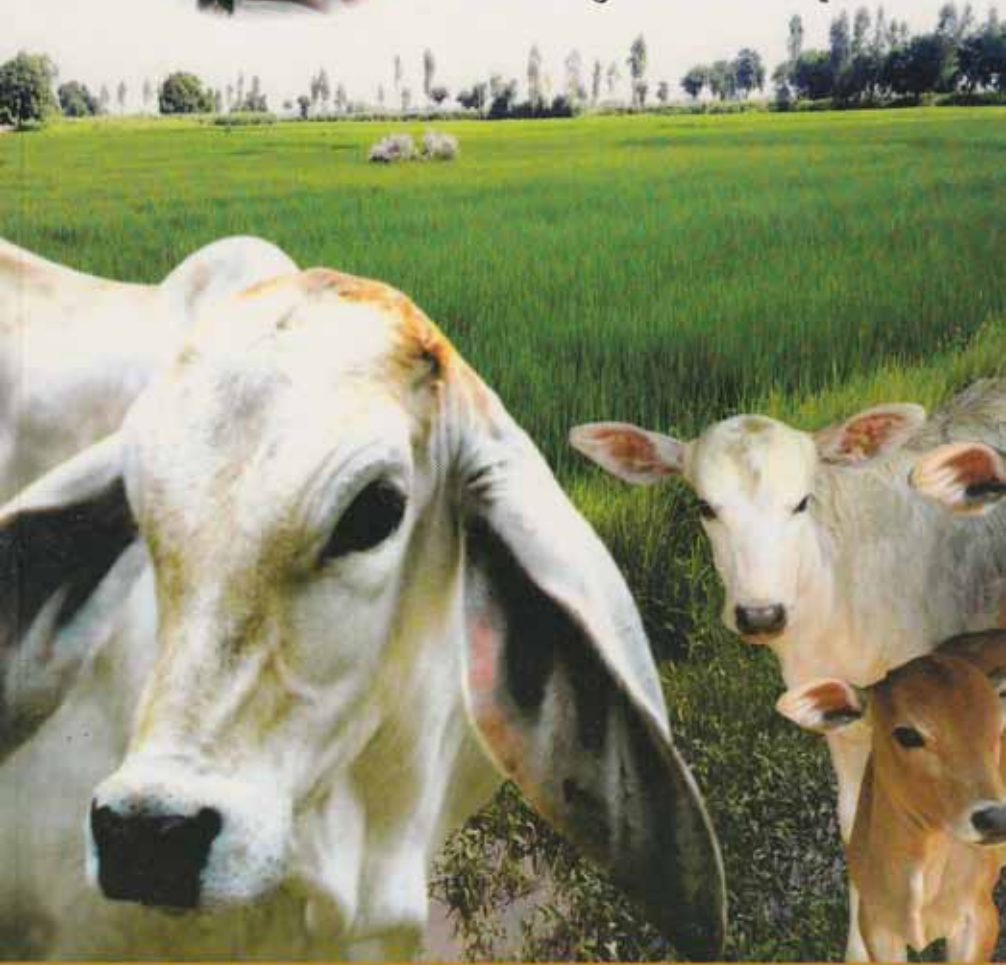

भाई राजीव दीक्षित - पुस्तक संग्रह (9)

राजीव भाई के व्याख्यानों पर आधारित साहित्य

शीर्षक	मूल्य
1. स्वदेशी चिकित्सा, भाग - 1	रू. - 50/-
2. स्वदेशी चिकित्सा, भाग - 2	रू. - 50/-
3. स्वदेशी चिकित्सा, भाग - 3	रू. - 50/-
4. बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा भारत की लूट	रू. - 50 /-
5. सरकारों ने दिया है देश को लूटने का लाइसेंस	रू. - 50/-
6. बहुराष्ट्रीय कंपनियों का असली चेहरा	रू. - 50/-
7. मांसाहार से हानियां	रू. - 60/-
8. WTO : भारत को गुलाम बनाने का संविधान	रू. - 50/-
9. गाय और पंचगव्य द्वारा घरेलू इलाज	रू. - 50/-
10. गाय और स्वदेशी कृषि	रू. - 50/-
शीघ्र प्रकाशित	
11. स्वदेशी भारत को पुनः सोने की चिड़िया बनाने का मंत्र	रू. - 50/-
12. भारत की पुनर्योजना : स्वदेशी के आधार पर	रू. - 50/-
13. भारत स्वाभिमान शंखनाद पर आधारित 10 किताबों का सेट	रू. - 50/-
14. स्वदेशी भारत की रूपरेखा	रू. - 50/-
15. भारत और पश्चिमी सभ्यता का अन्तर	रू. - 50/-
16. स्वदेशी चिकित्सा, भाग - 4	रू. - 50/-

स्वदेशी चिकित्सा किताबों के सेट में इनके अलावा 3 अन्य किताबें भी हैं।

राजीव भाई द्वारा दिये गये व्याख्यान (*MP3*)

हमारा संकल्प:

5 करोड़ घरों में राजीव भाई की आवाज पहुँचाना-साथी हाथ बढ़ाना

गौ-वंश पर आधारित
स्वदेशी कृषि

राजीव दीक्षित

स्वदेशी प्रकाशन
सेवाग्राम, वर्धा

गौ-वंश पर आधारित
स्वदेशी कृषि

लेखक : राजीव दीक्षित

प्रकाशक : स्वदेशी प्रकाशन, सेवाग्राम, वर्धा

सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित

प्रथम संस्करण : जनवरी 2013

राजीव भाई के अधूरे सपनों और कार्यों को पूरा करने के लिए

राजीव दीक्षित मेमोरियल स्वदेशी उत्थान संस्था
ग्राम वरुड़, पोस्ट-सेवाग्राम, वर्धा - 442102
फोन नं० : 07152-284014
मोबाइल : 09422140731

मुद्रणः
NBC PRESS
X-43, ओखला फेस -II, नई दिल्ली

सहयोग राशि : 50 रुपये

समर्पित

पूज्य माँ - पिता जी को
जिन्होने राजीव भाई को
देश के लिए गढ़ा और समर्पित किया।

उन सभी साथियों को जिन्होंने
राजीव भाई के साथ कन्धे से कन्धा
मिलाकर लड़ाई लड़ी।

उन सभी नये साथियों को जो
राजीव भाई के बाद उनके इस
स्वदेशी आन्दोलन को अपने कन्धों
पर आगे ले जाना चाहते हैं।

विषय सूची

1) प्रकाशकीय 5

2) स्वदेशी के प्रति राजीव भाई की अगाध श्रद्धा 7

3) खेती को गुलाम बनाया अंग्रेजों ने 13

4) किसान की खस्ता हालत सरकारी कानूनों के कारण है 36

5) खेती को विदेशीकरण से बचाने के उपाय 59

6) भूमि को स्वस्थ-सशक्त कैसे बनायें 77

7) वनौषधि 101

-1-

प्रकाशकीय

राजीव भाई का पूरा जीवन इस आधार को स्थापित करने में लगा रहा कि भारतीय समाज की व्यवस्थाओं को भारतीयता के आधार पर पुनः स्थापित किया जा सके। हमारी जो व्यवस्थायें आज चल रही हैं वे सभी अंग्रेजियत के आधार पर ही चल रही हैं। अंग्रेजो ने भारत की लूट खसोट करने के लिए जो व्यवस्थायें बनायी थीं वही आज भी चल रही हैं। अंग्रेजो ने उन व्यवस्थाओं को चलाने के लिए हजारों कानून-नियम बनाये थे, दुर्भाग्य से वही कानून और नियम आज तक चल रहे हैं। इसके कारण हमारे देश के लोगो की मान्यतायें भी काफी हद तक विदेशी हो गयी हैं। भारत की अर्थव्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, प्रशासन आदि सभी युरोपीय प्रभाव के शिकार हैं और ये सभी व्यवस्थायें अंग्रेजी कानून के आधार पर ही संचालित हो रही हैं। इन्ही सारी व्यवस्थाओं को बदलने का भगीरथ कार्य आजादी बचाओ आन्दोलन ने शुरू किया है।

भारतीय कृषि व्यवस्था के ऊपर भी काफी हद तक विदेशी प्रभाव आ गया है। रासायनिक खाद और जहरीले कीटनाशकों का अंधाधुंध प्रयोग खेती में हो रहा है जिसके चलते खेत की मिट्टी खराब हो रही है और खेती में लागत बढ़ती जा रही है। दूसरी ओर विश्व व्यापार संगठन की शर्तों के कारण और उदारीकरण की नीतियों के चलते भारतीय बाजारों में विदेशी कृषि उत्पादों की भरमार हो गयी है जो कीमत में काफी सस्ते हैं। इससे भारतीय किसानों पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है। एक ओर तो भारतीय कृषि - मँहगे बीज, रासायनिक खाद और कीटनाशको के चलते साधारण किसान की पहुँच से दूर होती जा रही है, दूसरी ओर सस्ते विदेशी कृषि उत्पादों के चलते किसानों को अपनी उपज का पूरा दाम भी नहीं मिल रहा है। नतीजा यह है कि सबका पेट भरने वाला किसान भयंकर घाटे में

खेती कर रहा है। कर्जे में डूबा हुआ बदहाली का शिकार भारतीय किसान आज आत्महत्या करने के लिए मजबूर है। इन्ही हालात को देखते हुए जरूरी है कि भारतीय किसान एक ऐसी कृषि-पद्धति को अपनाये जो उसे स्वाबलंबी बना सके और कर्जे व बदहाली से मुक्ति दिला सके।

हमारा दुर्भाग्य है कि जब तक राजीव भाई सशरीर हमारे साथ थे तब तक हम सेवग्राम, वर्धा में, जो राजीव भाई का केन्द्रीय कार्यालय था, प्रयोग के रूप में कोई खेत का नमूना विकसित नहीं कर पाये। यद्यपि राजीव भाई के खेती विषयक व्याख्यानों को सुनकर हजारो किसानों ने स्वदेशी कृषि (विष मुक्त कृषि या सेंद्रिय कृषि) को अपनाया और आज भी वह सभी किसान राजीव भाई को अपना अग्रज मानते हैं कि उनकी प्रेरण से वे स्वदेशी कृषि की तरफ आ सके।

राजीव भाई के जाने के बाद हम सबने मिलकर यह तय किया कि राजीव भाई के चिकित्सा, खेती, स्वदेशी से सम्बंधित विचारों को प्रयोग के स्तर पर उतारा जाय। इसके लिए हम लोगों ने सेवाग्राम, वर्धा में 23 एकड़ में एक स्वदेशी शोधकेन्द्र बनाने का संकल्प लिया है जिसमें आर्गेनिक खेती का मॉडल और उससे जुडी हुई आदर्श गौ-शाला तैयार की जा रही है। इसके अलावा स्वदेशी तकनीकी और स्वदेशी ज्ञान-विज्ञान के आधार पर एक बड़े शोध संस्थान की तैयारी भी चल रही है।

स्वदेशी कृषि के मॉडल को विकसित करने में कृषि से जुड़े सभी पहलुओं पर भी शोध होगा जैसे - देशी बीजों का संग्रह और उनका परिवर्धन, खाद बनाने की देशी पद्धतियों का प्रदर्शन और उत्पादन, विविधतापूर्ण खेती करने के तरीकों का प्रदर्शन और प्रयोग, मिट्टी को उपजाऊ बनाने के विविध प्रयोग, खेती में पानी के व्यवस्थापन से सम्बंधित प्रयोग आदि विषयों पर विस्तार पूर्वक कार्य करने की योजना बनाई है। इसके अलावा इन सभी विषयों पर सीखने और सिखाने की कार्यशालायें भी चलेंगी।

हम सबको राजीव भाई की कमी का एहसास तो होता है और मन में यह दुःख भी रहता है कि काश वह होते तो कितना अच्छा होता। लेकिन उनके अधूरे सपनों और कार्यों को पूरा करने के लिए हमे तो कमर कसनी ही होगी और यही हमारा उद्देश्य होगा।

प्रदीप दीक्षित
सेवाग्राम, वर्धा
30.01.2013

-2-

स्वदेशी के प्रति राजीव भाई की अगाध श्रद्धा और तड़प को शत:शत नमन

29 नवम्बर की मनहूस शाम को करीब 7:30 बजे किसी ने फोन करके बताया कि राजीव भाई की तबियत ठीक नहीं है, उन्हें अस्पाताल में भर्ती कराया है, वे उस समय छत्तीसगढ़ के प्रवास पर थे और उस दिन भिलाई में शाम को भारत स्वाभिमान की सभा को संबोधित करने वाले थे। जैसे ही सूचना मिली तो मैंने तुरन्त राजीव भाई के नम्बर पर सम्पर्क करने की कोशिश की तो दोनों नम्बर बंद थे, सम्पर्क नहीं हो सका। हरिद्वार से छत्तीसगढ़ के साथियों का नम्बर लेकर फोन लगाया तो बात हुई तब यह सुनिश्चित हुआ कि वास्तव में राजीव भाई की तबीयत ठीक नहीं है उन्हें अस्पाताल में भर्ती किया गया है। तुरन्त मैंने पूछा कि स्वामी जी को खबर की या नहीं तो उन्होंने बताया कि हाँ- स्वामी जी को सूचना कर दी है और वे खुद इस मामले में डॉक्टर से बात कर रहे हैं और यदि स्थिति ज्यादा खराब हुई तो दिल्ली ले जाने की व्यवस्था भी हो रही है। इसके बाद मैंने कई बार कोशिश की एक बार राजीव भाई बात हो जाये लेकिन किसी भी तरह मेरी उनसे बात न हो सकी। समय खराब न करके तुरन्त गाड़ी से रायपुर के लिए निकल गया यह सोचकर कि यदि संभव हुआ तो सेवाग्राम ले आयेंगे और यही इलाज करवा लेंगे।

करीब 9:30 के आसपास नागपुर के आगे कही ढाबे पर ड्राइवर ने चाय पीने के लिए गाड़ी रोकी। तभी स्वामी जी का फोन आया और उन्होंने जानकारी दी कि मैं स्वमं इस मामले को लगातार देख रहा हूँ राजीव भाई दवाई लेने से मना कर रहे हैं। वे बार-बार मना कर रहे हैं कि मुझे अंग्रेजी दवाई नहीं लेनी है मुझे तो आर्युवेदिक या होम्योपैथी की दवा भिजवा दी जाये मैं उसी से ठीक हो जाऊँगा। चिन्ता की कोई बात नहीं है। फिर भी डॉक्टरों को आवश्यक इलाज के लिए बोल दिया है और संभव हुआ

books.ringaal.com

Visit us for more books